



भू-स्खलन सुरक्षा

आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के बल पर भू-स्खलन सम्भावित क्षेत्रों को चिह्नित कर समय रहते आवश्यक कार्यवाही कर इनहें टाला जा सकता है एवं इनके प्रभावों को कम किया जा सकता है।



पानी का अनियंत्रित बहाव व भूमि के अनदर रिसाव भू-स्खलनों का प्रमुख कारण हैं। निम्नलिखित बातों पर ध्यान देकर हम अपने परिवार को भू-स्खलन से होने वाली सम्भावित हानि से बचा सकते हैं:

- जहाँ तक सम्भव हो बिना उपयुक्त तकनीकी परामर्श के पहाड़ी ढाल के साथ छेड़छाड़ न करें। पत्थर, बजरी आदि निकालने के लिये उपयुक्त स्थान का चयन परामर्शदाता विशेषज्ञों को करने दें और उसके सुझावों के अनुरूप ही खनन कार्य करें।
- पहाड़ी ढाल पर वनस्पतिक आवरण भू-क्षरण को रोकता है इसलिए वन कटान न करें और ज्यादा घास के लालच में जंगलों में आग लगाने से बचें। इसके परिणाम घातक हो सकते हैं।
- क्षेत्र में आए भू-स्खलनों का लेखा जोखा रखें व छुटपुट पत्थर गिरने की घटनाओं को नजरअंदाज न करें।
- मलबे के ऊपर बसने से बचें। ज्यादा वर्षा में यह कभी भी घँस सकता है।
- भू-स्खलन ग्रसत ढाल के आस-पास एवं नीचे बसने से बचें।
- भवन एवं अन्य निर्माण कार्यों के लिये निकाले गये मलबे को ढपल पर नहीं फेंके, प्राकृतिक जलधाराओं के समीप तो कभी भी नहें। यह विनाशकारी हो सकता है।
- निर्माण कार्य के लिये भराव की आवश्यकता होने की स्थिति में पहले उपयुक्त पुशतों का निर्माण करें।



- निर्माण कार्य के लिये ढाल पर स्थित बड़े पेड़ों को न कांटे।
- तीव्र भू-स्खलन एवं भू-क्षरण वाले क्षेत्रों के ऊपर भाग में ढाल की दिशा को परिवर्तित कर जहाँ तक सम्भव हो बरसाती पानी को भू-स्खलन क्षेत्र में घुसने से रोकें।
- वानस्पतिक आवरण द्वारा भू-क्षरण एवं भू-स्खलन को रोका जा सकता है। भू-स्खलन प्रभावित क्षेत्रों में स्थानीय घास एवं झाड़ियों का रोपण लाभदायक होता है।
- अतिउत्साहित होकर भू-स्खलन क्षेत्र में वृक्षारोपण के प्रयास न करें। यह घातक हो सकता है। इन क्षेत्रों में अपने भार के कारण बड़े वृक्ष अक्सर नीचे खिसक जाते हैं जिसके कारण भू-स्खलन दर में वृद्धि होती है। वन प्रजातियों का चयन करते समय सावधानी बरतें एवं ऐसी प्रजातियों चुने जिनके जड़ व तने की लम्बाई का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक हो।
- सम्भव होने पर तकनीकी मार्गदर्शन में जल प्रवाह नियंत्रित करने के लिये उपयुक्त स्थानों पर जालीयुक्त पुश्ते बनवाए व ढाल के परिमाण को कम करने का प्रयास करें।
- मकान को पहाड़ी ढाल से एकदम से चिपका कर न बनायें।
- पुश्तों में जल निकासी की समुचित व्यवस्था करें।

भू-स्खलन: कुछ सावधानियाँ

तमाम सावधानियों के उपरानत भी पहाड़ों में भू-स्खलन की संभावना को एकदम से नकाना नहीं जा सकता। प्रकृति कभी भी हमें चौका सकने में सक्षम है, इसलिए अतिरिक्त सावधानी आवश्यक है।

- भू-स्खलन सभावित क्षेत्र में बरसातों में सावधान रहें। लगातार हो रही वर्षा या फिर कुद घण्टों की मूसलाधार वर्षा भू-स्खलन को जन्म दे सकती है।



- बरसातों में एकजुट हो कर पहाड़ी ढाल का निरीक्षण करें और किसी भी सतही परिवर्तन की सूचना यथाशीघ्र सम्बन्धित अधिकारी को दें।
- भू-स्खलन संवेदनशील स्थानों में कभी कभी भागना पड़ सकता है, इसलिए मानसिक रूप से तैयार रहें।
- पत्थर गिरने, चट्टानों व पेड़ों के टूटने और मलबा खिसकने की आवाजों के प्रति संवेदनशील रहें। यह भू-स्खलन में सम्बन्धित हो सकती है। जानवरों के असामान्य व्यवहार के प्रति संवेदनशील रहे।



- खतरा भाँपते ही या फिर चेतावनी मिलते ही सुरक्षित स्थान पर जाने का निर्णय लें। याद रखें, हर पल कीमती और खोया हुआ हर पल आपको संभावित खतरे के और अधिक नजदीक ले जाता है। ऐसे में सामान एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुओं का मोह न करें; यह घातक हो सकता है। सुरक्षित स्थान को जाते समय कभी भी सक्रिय भू-स्खलन क्षेत्र को पार करने की चेष्टा न करें; यह आत्मघाती हो सकता है।
- लुढ़कते पत्थर, मलबा आदि दिखायी देने पर तुरन्त बड़ी चट्टानों व पेड़ों के पीछे सुरक्षा तलाशें। ?



- भू-स्खलन के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में छोटे भूकम्प भी भू-स्खलन ला सकते हैं। भूकम्प के पश्चात् भू-स्खलन की जरा भी सम्भावना होने पर सुरक्षित स्थानों पर चले जाए। मुख्य भूकम्प के पश्चात् काफी समय तक छोटे भूकम्प आते रहते हैं, इसलिए जल्दी आश्वस्त न होए।
- भू-स्खलनों में मलवा नीचे की ओर बहता है इसलिए सुरक्षा के लिए ऊपरी क्षेत्रों की तरफ पलायन करें।
- नदी द्वारा किये जा रहे कटाव पर नजर रखें। यह कटाव भू-स्खलन का कारक हो सकता है।
- नदी के किनारे, पहाड़ों की तलहटी पर बसे क्षेत्र भारी वर्षा के पश्चात् अचानक बाढ़ की चपेट में आ सकते हैं।
- यदि आप पानी नालों के किनारे रहते हैं तो पानी की मात्रा में अचानक आयी कमी को किसी गंभीर खतरों की पूर्वसूचना समझें। सम्भव है कि नदी का प्रवाह किसी भू-स्खलन द्वारा बाधित हो रहा हो। इस बंध के टूटने पर आप बाढ़ की चपेट में आ सकते हैं। अतः तुरन्त ऊपर ढाल पर सुरक्षित स्थानों की ओर पलायन करें।
- पानी बहने की अस्वाभाविक आवाजों के प्रति संवेदनशील रहें। यह आपकी ओर बढ़ते खतरों की सूचना हो सकती है।
- जंगली जानवरों का अस्वाभाविक रूप से नीचे, बस्तियों की ओर पलायन ऊपरी क्षेत्र में बाढ़ का सूचक हो सकता है।

भू-स्खलन के पश्चात्

भू-स्खलन के पश्चात् एकदम से आश्वस्त न होए। आप सुरक्षित हैं पर जरा सी असावधानी आपको कभी भी खतरों के नजदीक ले जा सकती है।

- भू-स्खलन से उत्पन्न मलबे में काफी मात्रा में पानी रहता है और इसके कई भाग दलदली हो जाते हैं। अकेले इस मलबे के ऊपरी विचरण करना खतरनाक हो सकता है।
- जहाँ तक सम्भव हो पानी को भू-स्खलन क्षेत्र में घुसने से रोकें। यह पानी मलबे को फिर से अस्थिरता प्रदान कर सकता है।
- भू-स्खलन के पश्चात् एकदम से इस क्षेत्र में न लौटें। इस क्षेत्र में भू-स्खलन की सम्भावना सतह रूप से बनी रहती है इसलिये विशेषज्ञों को अपनी राय देने दें।
- बचाव कार्य में मलबा हटाने के लिए भारी उपकरणों का उपयोग आवश्यक होने पर जहाँ तक सम्भव हो इस कार्य को प्रशिक्षितों के दिशानिर्देशन में ही करें।